Adei भक्तभाना अवर देश है। भनी वर् पर्भं उपाचि। भिक्तं हत् ॥ विनायका य ही भिन्ने स्वाभाक्तं हे ग्रह्मां य इ. भारत हैं मेर शहे भूथान कर्य गहें ने भ किराण ने उत्वड इंड नव के स्थाउ मस विन यहाय अवाभाना हम बहु बहु इह रक्षः नेवह । उड्यारभानभानीय व रेडियुर्भका देवा वि ३३ग्यू अस्पनं क्ल नथरान्यवादिषिः मित्राणु मुख्य श्रीविद्धःश्री उन् स्रीभद्गान्म भारत्यु उत् भार्तेवाना श्रुपशिषित्र रूपमा उद्योगी प्रवन्द्रम् वा इस्तु सं सभाक्तन इसु सं संब ल्नकं भुद्धभी भारह अन्तर्भ के उन्तर बहित्य की के के के के कि की का कि कि इंडवेंड नं नवग्रकण्ये भवक्षकार् न्य म्रा अवनका सम्बद्धानि । भ्रम वभा ३३: माल अध्य अर्गण सर्व विनयकृष्यु अभांकर्डनगद्भाभः उड्डेभा नाथर विही (भक्कि विभाग हणवर भ दण्याहें भावितें भगसंह भभन्तह न श्य विद्याल मा विद्या है । विद्या यसभाने प्रवेधचें प्रवेशन इन्द्र इंडेन वें गुल्प उच्च भद्र ग प्रभाविह भरभेडे सज्जाबन्डाः के निवस्याधनभः। उउभद्धन्यः वस्त्रीभक्षणन्य । ३ भ इस् व्रह्म व्रिष्ट ग्यू असुनाः अद्भान्य पारिकृतिक गंतीरी गुमिताः नशकीलक्भा स्टीप्रशिक्षक महाणामा अर्थे विविषणः सहीता भः इद् एथयमभः सिर्भ गण्यही अञ मन्भः भूम भद्रगणन्य शिक्षवरयो नश हिंदि गंतीरुयनभः यह मुन्त्रयन्। भक्त न्थः कीलक्ष्य न्थः विनियंगियीनभागिका भागामा अक्षेत्र

ाया वामामबा व व भः गण्या द्वार्क्षेत्रभः गी उत्तरीह પુષ્ણ અહિં નુ એક <del>કો સુ ન</del> ૧ માર્જીન માં कृति प्रिक्छित्यः गः का उलक्षार्थे प्र ब्रह्मधनुद्धारा गं,ह, में। कुषितमः, न,क्व, में, न इष्ट्रक्य अश्वेष गः वश्चित्वद्धा । उडः भटन्छ यानः 四3金 ०० अने हैं है । इस की उन्न ने सि विक्रांकिल विगाउर क्षांच्या सक बर्डिक व्यामिश्ट देवेस में देवेस या ३ उद्वीलने ग्रंथलं ही ३ भारती वन अल्ले गेंगेंगें ३ कि गंगन्य अपन्त कु सण्भे विभेयय नथः ० अन्तभ है। छि स ध्राम्या विष्युष्ट । १० विष्युष्टि । भी विष्युष्टि हीही किंगेंगेंगें अले ३ दवन किन । वि भुगंगन्यश्राद्धाः ० नमभूनस्य इर्जिल कु श्रुं ग्रेगमान र हा विकास है उस स अल्लन चित्रुंगंगलभाव 的新型。 गुल्ध विभारत या भिन् भर्ते अले गुल्ध डिकेंद्रण्या भिन्भः ॥ अण्डमे सिर्धि भागवी में यु देशन्त्रेशबद्धवन्ते भी शिमाबर कडवा अठे ज्ञान भ्रम् संस्वी है सभ वयः अराज्यकाः मचवक्रिके अध्यो। व्यक्तिसम्भः उउश्रद्धल विश्वक्षितिय इवड्सबर्ड्ड्रभक्ष सम्विधि ॥ स्त भाइरुधिनार्तेने विनायकः भारतानाम हिन्सी यह श्री उसे ॥ हिं अर्स्सवादग लंबभू सुद्धारियः गलक एपिः नि च। द्वार्यही सुदः स्वाद्यालय दि वंड गंबीर ही विज् योंकीलई स्वीव विष्यान्य किया हिल्ला विष्या स् ध्विनियंगः गुन्कि चर्चनभः मिर्व नचा कि गण्य शे भूगे सीय वरण है। पाँड हाम निष्ठ जिल्ही धर्म देखे ? इलहे विष्युष्य अविनियेगः भवा

ार्ग पुरु होम नहें में की भारते: लिंड विष्णूष्ण्यित निर्येगः भवा वु गे भद्री उद्या के वह वी उद्या भ क्री अन प्रें कृति गंका के दूरा है भि ही भाषा क्री क्वा कि हु से कि क्रिया उद्ये कि रागे ही व्यवश्य क्रिया। क्रिया इया ग्रेशक अर्थ अर्थ अर जिसम शेने वि श्विष्ठक्रमेयन कुथिय है मिस अह थि विलेशन भू रेब भी श्रीहरू विशेष क्षणक्ष अर्के हमय बेह्र बच श्रारण न्य भा गण्यही के सीवज्ञा कृष्ण यावस्त्र की क्री गल्म या यो अहि सूँ गंग ना अहि नः भूषेषया । अध्यव मुद्धीलन भाक्षी वनिषश्चि अनं ने स्रीही जीकि गंग न्ध्रेष्ठव्यवत्रवास्य अवस्य में भव्य अपन् बैक्षिक ००३ मन्स् विश्वमि हैंग विह नंदिकंकः १८०० या भः म बबद्वानेज इंडिइसम्मधी ॥ वश्वरीगणपरिवल्ल हैं प्रवीभर्भ गलक दे निची स्वय है सी भक्तणालभी बक्तक देवी देव के गाँवी देवी स बुद जुद्दकील रूप्युवि अवरङ्गभे भूल धानं कें ब्रिड़ र्छेद भिज्ञन न भू रू भ विदि ज्ञिश्वापिक्तिकिक्यो स्वर्धिक खेवर हिरियुहरू है गुलक्ष वस्तु हुआ अवव क्ष्यम् अने विश्वीक्षीक्षीक्षां गंगान्य वञ्चण्यवनव रह्म अचे रून् शुद्ध प्रचय थ भ इव्यक्तित क्षत्र क्षात्र । ००३ अन्तर्भा र्जा है। इस मार्थ । विशेषा कंरायस् विभक्तिभक्तारायडा स लभूषिभनेश्वधाद्वीलन्द्रभनः ० क्र चर्भार बड़ागं स्पर्धे चुमहिस् १ द्वन्ते भाष्य प्रमेश चुः भाष्ट्री वन्धि यः ९ डा र १५० भूगं खुला थे विह रवला हुन्थ क्रीवनीं भक्तक विविद्धियं माथक विन्ति । भूतंः। उत्ते लक्षे विवेशेन कुन्त भीवभ मित्रिम भवस्य है जायि है उन्ने जा तो भयः र जा जा भवस्य है जायि है जा तो भयः र लेश हुर अर्थ अर्थ कर है शिया विश्व नम्मा अला भाषां कराव की भाग मा व्ववसानावापिः दिस्युद्धः स्थित में उड़ी पली कला थार्ची हता शहन र

चैं उडु भिष्णे कुल् भाषीं के गच उदिवड<u>ः</u> ही नी रंग भी मन जिंकी नके राष्ट्रिति । ह विष विश्विश्व श्राप सीभव मुंड कृषि ही वर्गी व सी स भवते। विक नेके एप्रिवि अबद्भिष्ठ हो भद्गी इस भः विह्नी ब्री ब्रह्म हु इस्ति भीष उक्त भिर भभभच महाँ में है कि त्या ठ द्वाय है चन क्रकारा, द्वे क्रिन ने इंग्रंग ह दुःद राउ बिश्ववद्य स्वियोधः छान इन्नथेच ३० विद्युत्ति व हित ही लगर्स विष्टे बी भित्र से छन्न भाष ध्येयस्य हो ३ जड्डीलनं स्थिलं ही ३ भाक्षीवनं दूर्धने की रू वि दुन्त भीर भाषभाव सर्वे हुवाय है है है है है है है हिलायन्थः ३ वापकारी है ही ही हु न्तिशीपहरवस्य भेषस्य कुँ श्रेन्टि । हीक्री जुनजुन्त्या भः उ स्थ्रेनि श्रे धन कि ही बिद्वन अपि विश्वेषभय मस्या के व्याय के दिल्ला १००३ स बिक्षने अस्व र एया गर्भ जहा । युर् विरयन्त्रणा भ्रम् दिल्लभीत्री गर्य भिन् क रार्व अन्तर्याभनेशः रार्व हरूयाभन भा अहै विराद्य खुनन भन्न हुन्न कुला कुला कुला हरवरी यीय के भी प्रश्ना कि वश्ची अल हिच भन् भू हरवर्षाः चनुस्रकः प्रन् भाषी भित्भद्ध च मच उ दे वी दीम है क्री ल्या अपियोगः प्रकारिया क्रिक्टि જ દિવસ ક્ષાયા માટે છે કે જિલ્લો કાર્યો છે કિ જ ફ भिश्च व कि नीए दुवें कुन्तर उथ हे ४० ५ प क्षभा बाधान कुलक्यान क्षेत्र भक्ष बिव भक्षे विस्त्री संभू गण्यही। उड्डार भूद्रुक्षव्य । इज्ञेष युः भूषेक्य य इ । अन्तर्भ विकेही भक्त बन यन भः ० ः ३ । अले भूक प्तव उद्देश विश्व कि अक्ष विश्व स्थाप नभः विवृद्धियाभिनभः भान्ति मिन वङ्गुणायाः पृह्वविद्युलं स्वर्गेन्थक्य वः श्रीवृतं श्रीत्रेसु ॥ देव विकास उद्य नुवारां बहु भद्रेश्वरि रूपि अनुभक्ता व्यानिक्षित्र १व दिनी एं स्पर् पान मिनिक के शहर है कि अने कि लिए के दिन र्यभाक्तीवनकाश्री ३३ ३ उपनेविक मेर

क्षेत्रम्भावभाषा विभेषवार य वि विक्रु यंबा पक्ष भि न्नी ३ उर्ग परंग गर्म प्रक्रिका अभिक्रमा इंग्लंडिय र द्वारा भक्तां क्षियं स्वितः विष्ट्रियम् भव क्षत्र भागा भागा । अस्त का प्रती भेग व मभन्ति लीकक्षितः त विसर्वीभक्ष ग्रह्मीभड़्य युक्त का भक्ष ग र्विडवर ही बीक् भारति : मेरीकीकाई ल्युवित्वयः एष्ट्रास्ट्रांसः ही बेड् बी इ गं भ जी व भाः हमवर्ड कृति गर्पे की श्र हा का इन्त ॥ ही हु बी ति गं नित्त जी क् वम भः हणवेष्ट नहड्य एड्डिट्रीश्चन्द्र मध्यक्रम प्रश्चिमार्थः सन् विद्रहरि क्लेग्सदभूक्षि इन इं भिक्र अने परिवा अन्याभवीडामा प्रकृष्टिक्क क्लासा भाउभाउद्यक्त महाने हरू भिवद्यमञ्जूष्ट रिकार्भी समुक्ता कि कल्लाभ्याय विकास भारत महाहिषीभित इत्रम्मी प्रमुख वा १० इतिने में अने वि ३ भारतिनेश अने में १ वि में भी मित्र हत्ये भेशेण वा नशर १० वि अने ॥ वि द्वी वी में की भे : हणबर्ड कहिंद्वीक्षण्य ००३ हिसन मही उद्याप्तिक्षिक ग्रेन अन्त्या भिन् भः ग्रेसी देवाचा भिन्भः अध्युष्टं अन्ते ग्र नि ३ अन्मे सिरिश ४० १० वर अच्वा अ प्रदृष्टि उद्युल्ला स्त्रीन अक गुरुष्टि : हण वडी शीय है शीडिस ॥ ब्रासी के ब्रेड इश्विष्णियः गायश्युतः वीग्रह बेंगे के उसे गर्न वड़ हैं, वी दी म हैं की सी कुउसुर एप विनियंगः एष्ट्र विद्याभः द्व अविकास सम्भिया थे। विकास के भी मिनियुं प्रकृष्ण भारता स्मान्त्र ध्या हिन्नेयनं क्षुविभाउँदभाउँ के उद्यवेष व भि जिल्ला सामित के प्रकास कार किया कि किया क र्णववहन यही भदि उच्चः रणवः भ्रम या ३ अने विदेशी के अग्रामा

डिशियाच्याभे हि क्रेडिंग्य विकास र्गववस्य युष्राह्म उत्राह्म स्थान या ३ अने विद्वेति के स्वापन भः ११३ भं मिड्ना प्रवर्द्ध क्षेत्रभार गर् विवद्ध ले सन्न करीवन्तु इस्था भीया भी वश्च ॥ मारिकाराभउद्या ॥ कि भिन्नु व आक्र्र्यसंस्थाना अनुभूतिम्नु वि मारिका भाइने लक्ष्यप्रकृतिन नक्भाः ० जात्रभ यां भेग भन्न स्पेक्ष में में में में किया ल भ इ छ उने भाक्की बने थिय १ उन्हें मान तुर्वेक्वविकारिवृद्धिला क्रिनः भगसञ्ज् भेग्स विक्विं मामक रिक्न ३ उन भारत चियं का में भिन्ने (वे सब प्रेंस् रहा निभुस विभन्गत्रभञ्जूषं कृषि सन्नहः म्भानुव भणके कक्ष स्वाउच भद्रभुवि संविक् न्नभव्यक्षेत्रभवेशभव्यक्षितः रू ॥ ॥ वि मुश्रमी सारेक्ट वी भ द्रश्र स्थित व ए थि : हिम्रुक्ष सः सीय शिक्ष सर्वा सन क में बीट सी मात्र : द्वीकी केलक भी ल्यविविश्वाः रुष्ट्राहिन्यः रहेत् महिंदि भी उल्ले कि दें अष्ट किरण कूँ बेन क्षाम से क्षित नेक संकार है इंबडल छं उड़े द्वीद किना भ शर बी विभन्भाश्वर क्रियाश्वालन्ड क्रुकाश न्डे खें बिह्ना ल्या में का के के मारि हम्याय का नाक्षेत्र स्था स्थाप प्रयोः अरु नियानः सन् हें वीरणः भन्ने॥ विद्री मारिकारी वि अथु महिषी इतः मित्री वृत्ये ३ उड्डीलन क्षेत्र के के की ३। भाक्तीवन कुंधलं की ३ वाभक्ती रिक्ट मार्थिक दिवस द्वामार्थ भववा ३ शुक्ता व मने विद्वी में दें दें हैं के के पर भः ००३ छन्ने सं विकंडर्या भिश्चारा श्र ने बारिकं अस्तया भिन्भः प्रवंहिरास भिन्भः अधि क्थन ३ भन्ने विव इभानी बहुनं अचेवज्ञभः भए छाष विक्रि विवस्त प्रमान स्थानिक श्रीवास व मध्यीक् भड़ेत्वभू इश्वे क्ला भिनस्र भिः श्रिक्षका स्थापित्र प्रचित्र दे by eGa वीरिक्षित्र कि कि त्यान क्ष्म स्थिति । ए इक्षित्र भूद्र क्ष्मिक्ष्म स्थिति । ए इक्ष्मिक्ष क्ष्मिक्ष्म स्थिति । ए

निसन् हिं अन्दर्भ किए रहिभाइया क्रिया प्रायक्षिताम् अवस्थिति । भारता विद्वारणा स्था भी स्था में स्था म भाक्याणि ॥वाभेक्वायावि मञ्जी य प्रीभे कि इचित्रामें स्वाप्त संग्रेस को अध्य अन्त विक्रवाका अवत्यन भार ७५०० उ अल्लेक अववेष्ट्रस्य शिक्षक वर्षे अन्त न्हिल्याभिनेभः भाई ग्र स्थः यङ विवृद्धाला खननभू हवाव स्वा भी षडं श्रीडेसु ॥ नश्चनीचढ्यद्वर्गभन् श्रु मि बद्धाः गण्यहीकुः चंक्र्यद्भी देवी दवे इन् वीरों कीमानिः भः की नहें राष्ट्रित • एष्ट्रें विज्ञभः छिन्न हु हु ३ मिनु की भ मिल भः च कव चुड्यद्वर्गिकाव है के नि निर् नुभः काउल अर्थायहर्दा म्याधाः छन् विश्व भिष्ठह न ये ने भाका सुने वर्ग भूगन क्रिकेट शिंद्रभञ्जिक कर्ल द्रियं विकास मियो। अहर वृत्ते हु है। शि खेड्य इहिव । भूष मुन रहिती । उन्नेत्र कथ द्वीर १३ अने विद्वार अः अहम् द्वारी देश व्याप्त स्था ००३ अर है च म्भः अद्विशिवस्ता अन्तर अस्ति। कि अध्विष्य द्वार्य अभन्त भाग विषय ए गारा वह सम्म के नी क्षी म हिं की क्ष्मित ইন্ট্রান্ডর প্রান্তর প্রান্তর বিশ্বর छिए इति। चूड्यइहै वि दम् बहिये उ ण्डयाङ्कृती भूग किं ही देशी बाठवा इंड न भरण भे दैश्य केली मुझ्डी भर में भे अर्वा रिड्याणिश्राद्धा एवं भारत्ने हेरायाथा भः बह्न विद्युले चुरुवस्वीदवीर्थाः। विष्यु स्वीहवन् स्वीभद्र भे मन् लिए द्रि गण्यर् शुन्तः ख्रीकवन् स्रीतिकः स्री ती कृव न्यग्रेशक्षा नुषः की ग्लाप्टा पष्टा हुन्। क ही केंद्र के का सभा प्राप्त होने हिं यह किन होति । ये किमी देश हुन में नुसन वयक्ष स्वाभाषीय यह इसममं ही क विद्यान कर्षित विद्या है। श्री प्रमाणिक के बहुत कर्षित कर्ष्त कर्षित कर्पत कर्षित करिया करिया कर्षित कर्षित कर्षित कर्षित कर्षित कर्षित करिया करिया

१३क्षेप्युरुद्धवन्या भी।। ग्रयश्किक रसहितिः सम्बहितीः उन्हेन्स्मीरं १ अले छही कुर्गेवह वन्छवनमा श्रं नभः ०एड भा वि इं भा शाभः प्रकृति इ॰ व निकृत् वर्गिशीक से ॥ विवश्रमी मनक भर्भ हरव द्वार्थ व र भ्राम्य व भ्राम्य अ म्बीसवण स्त्री जी देश में नमः कीन्वक्रभी ल्यवि॰ प्रशास्त्राभो कि ये हुई। उ मिर नी अध् लिए थें। भुन क्व रसेठणवंड बाग्याची कृति नेहूं की भाक काउ क्रम य ॥ श्राप्त क्राने कि बोब्रिकेन कित्रया मुक्तामं इत कराया मुलेक स्ट्रिस हें ग्रेन्ट्रिवनए न्नी बंदु प्रथव मंडि मेण्डास्त्रमधेनीडारणबिडाडाडाडाडाडा क्र नेयोग सन्व भिक्रमनभाष्ट्र हि भार निया साराम्य प्रारोह हि मारे वार्य दिया ब्रिक्षिक १००३। भारत है मिन्छ नव र्जिशः खिट्टा हे उद्यान विकास सिन्दि सुर भे युक्त क्यों रवा श्विम बिनी भी विद्यार्भी व्याप्तिक संग्रहेन्त्रिव विनी भी अनेन याग्याची भीडाक्षु ॥ वि ब्रुश्ची ब्रह्म क्ष ३ भ ३ थ अ छन् उच्च ल द भिः स्वीण यही सुन्ने। जी विश्वेषरभाज्ञ मेव र ए प्र वि॰ अच्छन् रण्याल एच नुभः अरु है धु स्वीव - द्व रूप्ट्रीव निर्वेगः भव दे ह हिं चे ह नड कि। धे अष्ट मिषा न चुन केव म के ने इ क का 3 से से 1 की हमा विश्वास के किन्द्र के मिन के न भेनाक योग्य य पुत्रा यू । अवास्त्री विवा अवि चार्याण्यम् उन्देविहे ते.के त्रम् हि नश्नाम्य कि वि १०.३ भारत लि वित्र कुला क्षानिक हिं से कार के विक हिंगा से कि अनेन हमवान्य भ्रह्मतः श्रीप्रस्तु ॥ छन

10 9d. T. 9 or d. 0/31d. 00 अनेन हणवान् भ्रस्तिः श्रीप्रेस्तु ।। छन भेनागचाण्य भेड़ः भवात भेषिकः ठडा ने व्यंभड़ेड्ड भवाभिद्विः द्रक्रायकः स म्या ॥ हि ब्रुक्ष क्ष्मिक्ष का भन्न है व क्षाप्तिः गान्य स्वितिहाः भारति द्वारत ड स्ट्रिवि ड भः छ ब द न भे ड मिर छण अष्ट किएक वड श्रुक क्र क्र क्र क्रिक न्य प्रतिक काउका वश्चादना ४ 2: अर्डे हैं त. १ हैं हैं है । इस है है कि इस प्रकारी किन्नि भिन्ने भए कर्मने गर काम के का में के मान के मान कर का का का का चाह्रिश्म प्रेमिस्स अस्व विक्र भू ॥ विवश्वितिविद्यतीः ३ अने वि नेशहणदेशका श्री मा भारती ।। भारती अत्र भारत्याः द्वाना ३ हर्गवा इत् जूनन र प्रावन्ज्ञा श्रेष्टवः श्रीयकं श्रीक्षेत्रा वि स्था नामीन म्यान भेड्छ स्थि वर ही में हैं। म हि की ले हु है। प्ष धिरूपेः विक्रे हें मुं हर बीही ह लि ब्रिक्क भन्न सिवाय स्ट्रिसन कर से दे किं किंदि हैं कि है है है कि किंदि में ष्ट्रानं विधलें बुवसने अव्यवसन्धी इव भग्नी लक्क विश्वतिक है लक्की नग थरव्द्रमण्डी ही बी उने विश्वः भूतिक विवस्पे भेगव भेगवन्यः अले कि ह क्षें द्वी भी नक्षी नगरा गुरानंभः ००३ वर्षीनभः के हैं भा भि हैं भ के के जे Late rian Na Francoo, Rainay oth Digitized by ग्रावनः श्री असे ॥ महिम् विश्व राभ के ध्वरण क व वभवत ए थरि मुब

ध्रवहण क वा क्रमाव ए भाकि के स्वी निवः भागानु है वड रूप्ये वि बिक्सं विश्वं द्वं न उ विश्व अष्ट वि मि सन् कृत क के नर संका मध्य भी श्रु व देवेशण क्लेमा विश्वपिति हि विवाधकारिय विवास व अव इत सिवण्य विवग्रुष्ट श्रिवः भवे भू प्रेम्य इ। ३ विउद्भवाया विः। अन्तर्भेशे।। डिन अः बिन्य ० ड्रा के वि दें रेण्ड इधः सङ्गीवद्भावः भगभद्भभीय के माश्रिमा कि बिन्दीमक भारति क द्वांक अ कृष्टि अ अ अ अ क ल के हु । भार क्बीण्यशिष्ठाः स्थवभाद्राद्वयेवत क विश्वील दे कि कि भा क्रिके ल प्रवित्येगः देश्वाद्यः है बंद्व अः इ कित देशः अञ्च विषय भे भन्तर भुन्तव चन कर थेर्द्र भः कृति नेष्ट्र प्र विकारम अभ्येष्ट्रका सन्धा सन् विसम्भाष्ट्र हि विषड्ड मुस्समाधी। भाषां के स्टाइक हैं। जिसे ही द्वां भा कुत ने अ ब्रिश्लयः ब्रुटेका ब्रुका भी भन न्य क्रमोन्त भारित हड ने हुई कि वर्ड़े भने की थड़ाइ,य भी दु विद्युभेषु लें: असे दु सहूड़े हिं। जेन्य ही रहे ही स: भरभद्र भर या रि भक्तभः भाइक्रिय यंगी भिक्त द्वां विदनः म्भारति के मिल्या है के प्राप्त के मिल्या है नेशः ३ शाह्यीवनं रूभः अने ३१ वि व भः वस्याभे भेवयभेवयभः द्वारिकः अर्ल हिं कुं अः देशः भे भान्तव भान्तव हुं अः द्वां कि ० ज अभू ए भाना संभाना विदें ने अन्तर विदें भी मिली मेंबव मी थिशक एवं अन्तन हरण्य अने भः च न अड्ड भेड्डिय का लभीड्राइस्यः भीडे THE NAME OF THE PARTY OF THE PA र ब एगा क अहम वड क व क्री म भेः की राष्ट्रिति ग्रह्म किले भें।

्रिज्याक अहम्बन्द इंजी शी म भेः की राष्ट्रिकः यद्वा किया है। इभि विभव के हुए भें: भूग्ण छने हिं। उक्षेत्र ॥ विश्वभूतावि । व । । उक् भहाय विश्वीभः क्षेत्री अभवती उन्हें भ भगभाद्रा प्रमेशकाती ३ उद्भीतनभा की की रीमल ३ भाइतीवन अन्ते भाः भाः भाः के कि भी अले सिव्यार्थ भेगवभेगवा भा क्रिक् असे विक्रितिभः अहत्यनभः ० ३ भाषाः। भाषाः विदेश भूग्य अचवरा ष्ट्राभ्य अद्यन स्थितः भाषा र मा इस । वश्चा विमेर भडे न द्रभ ए भिर गण्यश्च विश्व गर्म वीच र वी वि म नभः कीलकर्मा स्टिप्टिन एप्टिक इ.भः केमी हैं हैं गरेश धर्मी प्रदेश थ ए छने कि हिन्दं विक्र के बी प्रारुष कण्यु ए भी पूजा भने दश्च है भरा है विश्वगढर के विश्वगर्ग कि चुस्ता अवस्थिति दिए हैं मैं उच्चित्र्यः थुः अले 3 भाकी अले गंगेंगें 3 डे कि के य विशेषिकं विश्वेत्रयने भः ३। गंगीडे अन्त मस्यापे भेगवभेगयक्षे कु ० जानजा ग विसन जार जानू ये नभः उ मुक् विगंकिरण्य अवस्थित क्रिक्त कर्ति भूगभूय द्वार्थि अस्ति विगंतिभूगये भै: ॥ गंडा अस्ति भ विश्वे स्वार्थिः एक विद्याल अनेन विभूतकती भीड धु ॥ वश्चरी भर्भ दश विश्वानराम रिवंतिमः स्तिरं दः अति। एति। रुभेः उपद्वाद भिन्न अधिकाम पि सन कव जिं कृति नेश् सः काड स्थाय राष्ट्र शुने वि अभेत्र संदर्भ भान्ते । सिर्भाई का स्यू वर्ता भारत ग्राभहान असे ने उन्हान है उन्हार यहि अनं हिं हैं ही भी वीरिश्वाहरक य किथ । हिंबतियार्गर्भ द्वीभास्तर्भ ः विभः श्वेषयेश्वर्यक्षेत्र्यभास्तर्भ ः विभः श्वेषयेश्वर्यक्षेत्र्यभास्तर्भ ः

इसि ॥ हिंबसब्यान्य विष्ट हि॰ यं ह म्ध्रिवितियोगः दृष्ट् प्रितेशः कृशिशिष इहाः कं कृषि के के कः चण्य सन् हिं एक मानि ग्राह्म का कि विकास माने माने व शक्षवदशी मह्मज्ञान्य पचलः समी भवा किल्यनः गाय। निसन्द्रणयातः सीउउन थेपी इनः बचुः १० ३ अले गर्देश्वभः सी कुष्यवन्थः विसंसद्धभन्यः कुरु भ हिंभा भूण्य अववज्ञाभेः उठ्ने किर्णा लिक। अने बहु शःथी।। हिं मश्रमी एक न्यान के का व व्याप्त के किया द्रष्ट्राविद्वाभः में बी खं के में कः बद्धीं इनाः स्टब्स अयं । स्वभुक्तियनि-। ि क्ष्रण्ड न्युक्त भ्रष्ट्य क्षेत्रभयुग्वरस्टनः रक्तियनः भ्रमी क्रिक्टने स्टब्सिस्टः ग्यारी हैं। ब्रह्माका वि. प्राथा व मी- इनः क्षेत्रः र्यु ।। ३॥ खे हूँ सङ्गारक यनभः ००३॥ ईंभा ४००० चे अववज्ञानः उद्यानं यन ज्ञानं क्षामः अस्ति ॥ ज्ञ त्या हिन्दी भः द्वा में है है कि है। से ए एनं अक्षेत्र हो हि व बहु अमर्अक्ष भेश्राक्रिश्ताक्ष्रेभुष्ड्रताः किती एकार्ड क्क वर्षन्य किना । वर्ष कि म स्थर्य वि काकिली यायवी बार वि रें ३ में क्रीयू क्यानाः ००३ हंभार भववज्ञुः वृष्यविश्वित्रः उद्युले अन्त्रभ माः श्रीयां भी उन्ध्रा ॥ हि नश्रमी क क्यी देश भें प्राप्त सने । इसे भवेन हैं। विद्वार्क भन्द्र न्त्र प्रेरेश क्लेश की भी कि भी कि विष्ट युजि दिल्ली बें अन्याचा इः इश्रेष क्षितिः ग्रुयशे १डेच सभाउचे चि । बायमङ्ग्यी उन्नेश्लीवः ४.३ छ द्वीरेण भाषायनभः १ ३ द्वा भारत अववञ्चाताः सम्माचि इत लाभा ॥ विज्ञुभू वृद्ध ॥ व विश्विति । स्टूजी स्टूजी के जा प्रेम कि इसे कि स्टूजी स्टूजी के से प्रेम

र्देश वद्याव क्रमा श्रेशिय १ १ १ १ की बर्ग भः भूग्य सन्। इस् भवंभित विद्वार्क्ष कुल्या निर्वाशिक्ष भाक्त भावित विष्ट युजि दिल्लीव से भाषाचा इस स्व गुर्यश कि च कभाउँचे चि क्रास्टर्य पी डिने स्पीवः प्र ३ हि द्वी हेता भारत येन भः ० ३ द्वेभ भूर अववञ्चाभः भन्धि व इर लाशी ॥ श्रि मुध्यी मुद्र्भ। व्रूट व म क्षित्रहिष्टा द जडी सुद्धः सुद्धः स्ट क्षित्रहिष्टा भः भाषा भे में भाषा मीद्रक्षः ४एण्य छुने अन्त्रभक्षाद्वन ॥ विकाशका ने भी उने बाहारी उपलक विशिष्यक्षम् वाजाविक्राम्भावणम किं जनस्यूवि द्वेष्ट्रह्म्यची उनः स क्रिंध् है। बिह्नी सुधिरहण स सुद्भायन भः क जिंभंभी ब्रह्मसम्भः ००३ द्वेभ श ्च <u>अ चब्रु</u>क्ताः समहेन्द्रि विवद्यले ॥ हि स्थान सम्मान स्थान स्थान क सन्मारेष्ट्रा रही। एक बिक्र भः वं वंशी वं शें शें यः स्थः रूप्त स ने ॥ नी ना हिन्हें ॥ दि कल का का श्रेण ब्रिनाअंश्वर्केलायंनः प्रक्रिक्रनगर्भ य ज्ञेस श्रुवद्व भोगा विष्ठः वि अह प्रश्च वि क्याभुज्यपी । उन्नःभागः भू । ३ अनै विकीक्ष्मचिकायमन्त्र गयनभः ०.१ ईंभ के कि तबवक्रिभः यंभेषिष हिन्द्रान्तभी।। विश्वस्तिगद्गभागि ए ण छ ए हिंद्र रूपे एक्ट्रिक्ट्रभः में भी के में में सः भूष्ण छनं विसीहानुष हि भी मका ३ स्ट्रीन इ. स्थी ज इ न हाथ **३१ भिंदाभन्**रक्षिपयाद्वभेक्षात्रालि यः १६ मभा ३ (्या ४ 🗢 भि रहता अडिशिवास्तरक ०.३ ई का र of ate Arjan Nath Poinawari Pigitized by e idpo व्याद्वाभा क्रांका वी कार

જુ હજાલા જાય: મેં મી મેં મેં મેં મા विद्वास्थाः ४एण्य छुने अत्र प्रकाह्मन ॥ विवि अअव्यक्षेत्र के विकास अव्यक्ष कि कान गृति है है का हुन जी उनः स क्रिंध् है। बिही सुधिक भास सुद्धायन भः क जिभाभी ब्रुद्ध्यनभः ००३ द्वेस क क्रिज्यवञ्चासः अभेडेच्छ विवद्धन्त ॥ हि सुध्य अने सुरभ दूध जार ह गाय ७ सन्धारेष (इ. स्ट्री॰ एडा बडा भः कं बें भी जें ये कें या उत्ता मुल्ल व ने ॥ नी लायून है ॥ हि कल क क्रेश्व विधिनाअंश्वाक्रिल्याः स्वाधिनगार्थ युज्य अवस्था भागानियः वि अह अस्य वि क्यां भेडाचरी । उनः स्वाः भे । ३ धन विक्रीकाम्बलायमम्बरायनथः ०.१ दंश, रे.क्षेत्र नवडकेशः संभेवप् विविध्यामा ॥ विविधित्य महिन्द्र भे के द गुर्क गुर्के क्या एक किन्न भी भी कुँ में मः भाग्य छनं विसीहानुधि निमी सक्ति। भिन्ति है मह स्थी ज्ञान का जान 38 भिंदाभन्य माया हुआ का कि यः वह सभी ३ रेल्या लक्षा भी रहे के व इसस्वणी उन् के न् ? अडिशियाचनसर ०.३ है के में गज्ञ बा उन्हें पूर्वी क्ला है वा क्ला का एक हिन्स मा मा मान की है।

50 विश्वास्त्र सन्। निष्ठानयुत्रं। विष्ठ राष्ट्रिंभक्ष प्रम् हिट्डे में कुलाम सिंद के उद्भेशकाका श्रीवडान्। भेडमी ग्रुविः वि म्मि अर्चित अञ्चलहु से अरच्यों भिन्न इनियाद्वे हे हिष्णकार प्रकृतिक उवन्धः ० है। हैं भे भूग प्रवच्या विस्भार अधिमहमदिविष्ठ वामा ॥ अविनव्युद्धरणभेशे मुद्देशिनीवर्वे राहिकी स्प्रामा निर्मिशम्भ मेरिन ह उव होमः गा क भड्नान बवीक रूप्त. एम्बिस्स स्टिक्ट अस्ति रपरक्षी सुन्ता नद्भाक्ष धर्मा भ विश्वरं धरावे वि भवश्रद्धाने विषी उन्ने इतिथः ३ छिडी भहन्तभहन्तन्त्र्य धन्द्रः १०३ ईमा प्राप्त एष्ट्राविद्यमः बनन भहन्तिविश्वीशीष्ट्रः ॥ छि भिह्न स्त्रामः होत्र एषिः हिः भिह्नस्त्रः ए ति दक्ष हिन्द्रांशः र्राट्य स्वत् हिर असी रज्ञवभनं रज्ञभन्तं विक्रिधिक भ अहरू किमंगनारं पिद्रान्तानमा भूर इ। विरुप्ताप्त प्रमानिक्तीर विवाधि भर्भी बहरा ०.३ ई रू.ड मः भिक्तनाम में ये मेरिक्र गंभी भी द्विवी स्टिस ॥ वि वस्त्री गर्भ भ क्रमा वर्णि । भरागडी क प्रश्ने स्ट्रा में इसार भेरान छाने भीड सुरग्रेश में भीडियो से प्रश्निक स्थित स्थापित विद्या पुरंक्रवी एकं पन्यू का वर्ग में हैं के

लाइनारी महित्रमें मरेश पुरं में पर्य पर प्रायमी में किंग म्यायवि भीरमुग्येणी रडेने पर र्मेम्बर्ग के शियनक्य मुक्त को र्र्भाश्य द्वारा अर्थे विक्रम् विस्थास्क्रभगभन्ध हरव ए सन क इस्मीके रूप मुश्रामक के जवनायवि । उन्युप्य पी । उन्रू भनीपूर् ३ छाने रक्ता विरक्त अन्र रक्त भाक्य विक्रिधि उपमें इस्मेश्वी उन्तेक रेक्रभंगिष्लभ्धक्रभो एक्रभीक् भयन्ती ० ड ४ र र भः उद्यन्ति । इ भरीक्वी भी उस्ता है वश्वकी हिन् क्रभत्र हु व व विक क्षिक हैं क ति. डाम् : राज डान् स्रविन्त्रभेष व्यन्द्रिक्ष अन्त्रल्था भागा । मुंदे हिंची हा मुक् प्रलक्ष प्रमा म विकास्वनाय वि रज्ञवश्रुवारी उन वसः मन् ३ मन्त्र हाना सहिता है। विक्यतीशीयश्चा कि वश्चीयता भे भिन क के अल्लास्त्रीक रूप्टें अर्थित के के अल्लास्त्रीक रूप्टें अष्ट्रेन्स्ना द्वाडिक भी नम्बती भवेगाने भन्ते ग्रंभून भक्षक्र ग्रं उद्गार पवि क्रिक्ष्य वर्ष उन इंडिंग ३ उन्हीं भगेर मंन मय्डाइ यक्षेत्र है प्रश्नाः उद्येउन्ह्याची भी इस्ता विभिन्नाभा है उस ए सम्बर्ध भिम्बित्र रूप एष्टा दिया। य क्षेत्रमं वि महुज्बद्य पवलं बुज्ञ र्भावरंभिनी भवभिष्टिभ्यं है गिशिक्षाक्रं भूमभूद्रभा गुप्रही स्क्रावन्वेच वि भाष्ट्रभाषाच्यी । इ नश्मिष्ठः ५. ३ ही भिन्नी भचभन्य भूभः ग्रम्भः ग्रम्भः १००३ भूः प्रभः उद्युक्त १३ च अस्मि द्वारा १९ १९ १९ १९ १९ १३ १७ भट्ट ए ज्वी है स्पृ ए एप्

किसः रेजि केन विश्वीर ग्वानन वज्ञभन्द्राचिक्र भिडाओ श्रेमधा भेडा ल्बी भद्र ए में का मा मिल में बत्ता है। उड़ी करि 3 सम् क्रिमें के ब्रिश्न मां राश्न व्यवस्था वर्षेत्र १००३ थ्रान्छ उद्गण अ क्षा अधिक । अध्य कि कार्य बुरू भाक्ष्य उनवा भूः ॥ वि इति मे शिश्वभन्ने स्राप्त । हा माने स्राप्त है षिः दाभेः विश्व व्यन्नीय यही सुरा चीतिहाः भाषां प्रवडः साधितः स धभर्भे प्रापश्चित्र सस् श्रामी शिव तः ॥ इसः ॥ श्रे इसि १ भरम ने भिष्टिक विश्व स्था । मृत्य द्वा । ક્યામાં હિંમમાં પુરુષ થઈ વિદ્વ સ્થામાં હિંમમાં પુરુષ માં પાસ્ટ્રો अवयांच अकत्त्र विश्व सुभद्र विश्व अहम्बार्ध है है जिल्ले वा जिल्ले वा अ रअंथरं अङ्भञ्ज त्रिश्चर्यः भिर्वीव य क्षान्य भी इधि भूरभेविध स्विष्णु क्राः भाषात्र विदेश हो । अपना हें ०.३ ॥ लच्छा स्थात है स. हर्व वा दे ह ग्रवन्त्रवक्षी ४९% खने अड्ने जन् मुश्रदेश ३ मुहिश्रुं॥ अवस्तिवश्र ॥ विक्रानिक्ष्य विक्रिने वन क्रिने क्ष्रप मुख्या श्रिक्त ने ने विदिश्य श्र करा देखा के कि कि की मान एकः दिश्चित्रकः क्षेत्रस्तामस् व्यवड ल्ये वि ये बे स्वापा विकास स्टिमः र या अने ह्यं भाग कराव व्यास्त्र वाराशि हरू मध्यावि । ब सम्बन्धिया समा व यवन भर िम् येषद्वविश्वरक्वन विवेभड्य ए<del>ये</del> यन्भेद्यभुक्तवः हि ० ३ ३ ह्वाण्यः इ मवण्डवः द्वाः भीडिस् ॥ हि गण्यः इ चिनान्त्रेष्ट्रभू देशिभागः (एवं रू.) व्या क्लाडीर वहन्य क्र क्र किश्मेश्वर रहे

क्रिक विश्व क्षेत्र मान्य क्षेत्र क्षे अधिक्रकः नं यश्रमी भट्टानाथि महस् मूर्ण्याः तर्मनः केलयद्विः एगेडी स्टबः इद्भावित स्वानामा द्विङ राष्ट्रिविनियगः गण्यनद्वि क्रधहर्म्हाभः भ्राष्ट्रयाभः स्त्री विह्याक्षणा गण्यश् रद्भन्यवि बड्डी 31 शिवानी नार्के बाल मीड़िस क्र मह कृ विंकवी छ भू में भ स्वभु भ भ ल्ब्रुगलंब्द्रल्लेक्ट्रिल्स्य अवः म धं और किः भीसभाषन्भा हि ० ३ है। अनेन कवागान अक्षाना नाथ कि भी देश विश्वश्र की वी में अब कि की लाउँ कि कामिशिवरीयराज्यः अप्य सन् हि भ छ्रे भवत्व र मिडे क् शिरे भड़के न किंव योन भार्यका मिनि विकास भी क्रुयेषु,मा उनस्निकं के विक्रुट वस् भि रिष्यंभिचल्ल बयः ज्राक्षणः॥ क्रिके क डिकेंब य वि भेना वि भडेंचे थी । इन् तभाः थः ३ विज्ञे तं ज्ञागण्यन्थः १९३ इं था अभः अक्रिकेडराण्या छ बसूबी मज्ज्ञवन थिडि भन्न से डि 3: कोई व गाँभः इस्युद्धः स्थिहः भूरभाष्ट्रास्वर स्ट्रेंड इसः विदेश यया मवानं राष्ट्रिये वि विभवे। श्रेण यनं विस्व इच्छ भरी भित्र विद्व इक्ष विवास्य अधिया यस्निक्त भागिष्य हुभगी: अर्फ अभ्रष्ट्रहु है भड़े: रच्ने क्यी विन्तु विद्वा भारत भिवविक्रक्ष्यालनी निश्चिक्षकि .. णः गायदी के हा सगद्भातिः भद्भारः । संचित्रीशिक्षेत्र इनः अहः भूरः ३ कि मिड् इवाना श्रमा सन् कं सक्त रिडेश्वर

इवन्यभूमगम्बद्धं मज्जित्रवृध्वद **"ध्य अध्यक्षण शिवी बांच शिक्षा** महित्र दे का बाउर के से महित कर है कि म राग्य अनेन छ हैं ही भः अहः श्री है से विष्युम् वन्भः क्ष्युभरः विष्य तांबव के क्ये के कि विश्वायां याभ विभवे अप्त चुराह्म या अहत हो स वादाश अने विकिशनहास्याल। ग्रुबरी थडगाय वि स्वाभ निर्देशी उचे: चनःथः ३ वि एउबद्देश ०.३ इ क्रवण्ण चनन चभः भूडिक्ष ॥ हैं च्छ्रम् इडव्डूगैंश्च्छ इने देव एथिः वक्रीसदा ७ इंड्विंग रूप्र द्या यउ के शिव है जिसा अपने के व कि वह अर्नवर्गभनाकुम वर्गभन्भ विकर् भित्रभ्रम् इस्ट्रिम् इच्ड्राम विनव भारवित भक्ताभाषाविक्ष देव रे पहुंच द्वाभू अभव ह्या है। वेव इस है। विचिधविश्वविश्विष्य हिंग्ये द्वेभ स्व गाउ वारे च हुए इंगी सर्वी असर्थ उनी भीज्ञ ॥ जि चर्स्य अक्षा है। य बहुत्कर्मे स्विधू दिया चर्ष्र्युद म्भिड़ाक् यह देश देवड भड़ हैयद क्षान्य विविधेषः स्था विश्वेष यं हा युर्ध्यक्ष उसि सगिति भ मिनमें भ भिवतनं सन् एवं रहार्व भिववहरा नि नेइक्ट भेटे ग्रंपी बीचु में भेज द्वार का भन्ने के सम्बद्ध हैं हैं से बिर्ध युष्भद् ननारे भगित थार प्रध्रव ने द्वार एकपुरं गरे नुहुए इंडे भेडिति हुने: भाषीमीचि रुचे: भाषाविष्य A to a late to the state of the state of the मक्रुमारिशि ग्रंचर् उद्गायिन

वस्त्राचारिका ग्रांचरी उद्देश्याचार भक्तिवया उन्माइक्षियः भ ३ भई छिड्ड के ग्रह्म है । इसे मन गाउ खनन ब्रह्म हतः धक्त भी द्वाह्म य ह दूरकः भूडिक वन्त्रभात्रभा स्था म्डक्म वंसविक अध्विका सक्षा ल म् । अवस्थ साह भस्ता स्ट्रिक ।। छ ब्रु सीम्इभद्वारिका नम् ठलकु भउरध्ये असिन् च हिंदा क्या हो स द्यः सद्दर्भः द्वावयः सर्भद्रः निवा इ.क्षेत्र क्षितिक क्षितिक । हि.त. इ प्रमानं व स्वत्र श्राचन भः मं क्र भारिनी मधी भडेंचन भः उत्त निर्भाष केले भुरुद्ध ग्याभः भन्न विशव स्रव्य इंग्रा लेशभवडी भः सुन कव ल्ला हान ल्रिमक बाभना यन भः कृति निर इयायकं धरा विम्हल लः वार्मन भः का सम्बद्धा प्राष्ट्र हुने वि विश्वलभशे द्वारं भद्धभ्वमं किश ह्वांकि कि र कि भूउं जाने में मुंगांविक भ अवभिक्तिविष्यं अधिकं व इसम नभा ग्यारी भाकायकि मिन्भार या में भूके प्रमुख्या के अपने स्थापित कर Ga The said of the half at

विक स्वमञ्चल विभव्य के बहुत डा क्लंड बड़ विग्रह लिए हैं ००३ है था अबवज्रुभ: क्लंबर उद्दल अबबहरू अस्तिक्षा है ब्रह्मीय स्थान भू ह मा छ अ के कि खड़ने विभिनिया विभागां श्वा श्विका छ अं मार्थः हथा डि ए के बार में के इस्ति उ निर भन के थ विका अहर दूररा अन कर प उपस्ता किनि नेक विषयि ल कव सार् भ्राण क्रुने अववर्ग जि ७ स्थान है। ० उ ह्वा उद्दल्या विष्ठश्री अर्थ वार्थः वासीनमधी स्वूषा विश्वाप विश्वामः अञ्ज्ञाति विभिन्न स्था किति भागः विति सेना । वे श्रे कुरुरस्य न इभिन्न क्लि विभवन कर्नेश्व वीरा भ विषय वीड दश्या स्वा কৰ অবংবৰণ কৰি বহু দ্বাভগীত্ব याभस्त में भी करा अध्यादिन अपन हिं उड्डाह युर्धावनिहं भन्ति उई स्वीर्धे द्ववंभक्त सनिक्रभरं नेइभ क्ष अवश्वा क्षान्त्री भे प्रस्था (ज् अवबा:अलाने क्या स्वंधूलाभः भवं अच कि कुल भिक्ष्ण गण्यशे वि वस्रक्षायवि अद्यान्वर्षे उत्रथ्यः थ े अहः वि द्वांभवान्य तरास्त्र प्यारिम खेव करंभवी रः वीर्ड कर स विश्वस्व वर्षे स्वाद्य कि मीक्ष या अस्त । वि ०.३ इंश्राह्मका खुनन खुर्ने अर् व्यव द्राप्त द्रिक्ष ॥ स्वर्ध व्यव्या हैं छन्छ ३५ थ ३५ मजीवनः कि। भः खाद्वित्र अः द हिक अवित्र म क्रिक्त भारत के त्रिक्त के प्रति के प् वडुभन्देरिक्क्यस्त्री उमिर मुभाउभ

क्रिम अई विश्य दिन्य यनभविश चन क्ष रखने प्रचेत्र वेष १३ कृति नर् र्याय क्रिनिम्डना कर चुश्य प्राप्त प्रकृतिं ग विक्रम् वि । ३ भइन हिं यदार्ने उरणभा वि ०.३ इंभ उध्वतिति हिडरे ।। ॥ उ याउगाना उस्माइस क्राइय गाउभव्धः १३० भेगेद्वा एष्ट इनः हैं बाडी के भनी दिवि में ह यः श्रीवद्धं उ विर यः भवउष्राध्ये अध्य भ विषय उष्टिविश चन् कर् अधन यदा उना कति नेश गर्मा अ म् डिट्ट लोड्य का उभ्यदण प्र क कि महिन्हें गचरी हिनिय कश्यावि श्रुत्र स्वीपी इनः भेगः भू व अ इ: १ड बाजी बाला नि । वि ०० इ 2 2 de al. 12 tur se (225 au od 11 मुश्रित्र है विभन्त मुश्रिम ह गा क केशेयवड राष्ट्र वि इ विद्वत चंद बिवः उ मिर एक्ड्डि डिः भृष्टिमाप भविद्या वर्ष अने क्व अभार भिक नि नेरे किन्ने कार कराय भूगा ष्टानं हि भूरभुग में चिहि ग्रेचरी हि मक्षाक्यवि प्राथायणी उने म् ३ भद्रः दि स्थायुक्त दि ०.३ ह यन सिर्देशिडयुक्त ॥ वर्षे वर्णभेगति भड़ेश दाल्य ए हि.क उत्रह स ध्वि । त्राभिषे मं हूं भणवत्र मन ने उनिरं चंडिवशिक्षे भन्न भिराप मुन्नि अम्बिभा स्न क्व अभाव भाराभावत कार्य ने इंद्रिक्त में केरव मान मा का विसमान का मिरि ग

भाराभारत कृति नेका द्वाराधी ग विसीवणय मन्धर्य उनेवणः हिं विण्यासी अथा है ० ३ ई भ वह विश्विद्यार्थे ।। विविद्यानिक उभाइस गाइभम र हिन्द्र प्रत्थ उद्गेर मार्थ द्वानाः वि विकश्यविश वमर मं क्र ग्रह्मभुभा अभागी क डिइ डिमहूतन में भे निष्ये य देती विस्त च कर वभाउभारत किने ने उस्कार् स्विला इहि विद्या कार ७५७ ४ छन विद्यासयम् गायरी हि य कथाय कि भार महि पणी उनक्षीवः १ ३ अदः विकत्भ उच उपमहे हैं कि अ इसे महस्र डि भभन्त्र विवद्याला ॥ वि अव्य विभा द्वीक्षित्रभेटियः स्ट्रेगारी श्र वर्षे का अति हाभा वि वनेद रिस्टेंडमं में हे ब्रह्म छ हो पर हैं उ बिर एउन भर्धि सिखं अस वि वि विभाग सन्भात्भ सन् कव ७ म्य क्यिकनि नेर भिरंध्यभाउंभप्र गउ मध्य। भू छनं विभवपुक्षाङ्ग निकं गायरी विकास यवि स भगणार्वेषीम उत्रः सुद्रः प्र ३ वि उद्धार कर में विद्यान मंत्रविशिष्ट्य सात्र्यीभविष् ग्य क मनेन्द्री हैं। इस्ट्री हमा मनोती चं हा गिक्ष्य रिम अभे ठव्ड भद्र विका भीउँ चन कर of Life Arjan Nath Handoo Rainawari मध्यकान नर १६ भूतः I I Trake to the second

4 1. 1 5 2 2 2 2 बेश्च भ छने हि नील क्रिनहै। क्रिड्रें बेड्ड ब्रिक्ट क्रिक क्रिक वर्गा। इनः भ गः थर ३ भद्रः वि सर्वे स्वीतः विकत इंभ द्राष्ट्रचले डिउद्यलको ॥ छिक्या निश्चिम् अध्या का का का क्षेत्रव ए हें हैं है हैं स्थाप कि वे प्रथा है हैं है कुव मंडी ड सि अया वांचः अधि विश्वा भाष जुर कर कथा सिध्य करि नर वड कार म भूखदर्ग प्र छने विमीरं स्था है हि भिक्ति वय विश सक्रम्यान अन्यक्षः स् - ३ ॥ भद्रः ॥ विक्या श्चित्र हुन वि ००३ देश र अबाजभ्यत्विधार्याच्या विकेष्ट व्याचित्रिभाउत्तिम्बद्धि ए गा क क्र इ. स.श. माभः हि कि इह हा न न क क्रव उत्तर यसे अहा अह मि प च प्रमास चन कव सम्मासः कतिन र् ब्रश्यम क्रा ब्रज्य दर्ण थी क्राने की स्वास्त्र युजा भिडि ॥ यूपि भरुष वि अञ्चलकु अध्याषी । उनेके तः हे विक्रिक्ष महान है ० है इंभ जिम्मे भक्षेत्र ए विद्यालय अधिशहकी नं यूद्रा ली विकिश्य थः अध्यत्वः ॥ कि यहा क्षित्रं उप क्षित्रं य क्रिक्यरण्यभव अक्रिम्भभुउद्भव on bi ate Arian Noth Handoo, Reinawari. Digitzed by eGar भवडा पुर

भवडा पुष् उन्वर्श्वीभक्षमञ्जीभन्त्र सदमस्यिः क्ष्मू दक्षिः गायहं व्यक्ते अक्रमासीहराः श्रेषेः भक्तमहादिवीयः भक्तमहान्य थि : व्यक्तिमः र छ : अन्ति। यो द्वित्व विश्व कि कार्य के कि के कि कि कि कि कि कि वि हिम्मू असिर स्थाउन के उन्ने मुम्म ध्रिवभे कडिहिं। हिं हिन्द्री अन्तिवासि राष्ट्र। ७६ है है थः यङ्गी उड़ा में नभाके का मिंदी में कि का मिंदी का ता कि के असे हैं। राभी प्रकृष्णि के अवस्था में बडफ् न प्रकृ क्षा वर्भा स्तुन हरेल्यभा सः अरा द्वः अथि काः श्रीवृद्धारुवातु ॥ tion of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitize





